शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय किसान साहित्य के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. प्रतिभा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दतिया, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आज वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को अभूतपूर्व साधन दिये हैं, जिसके कारण मानव ने असाधारण सफलता प्राप्त की। हम आज मशीनी युग में सर्वसाधन सम्पन्न होकर जो कार्य दीर्घ समय में कर पाते थे। आज वह क्षणभर में भी कर पा रहे हैं। यह विज्ञान की उपलब्धियाँ हैं, जिसके कारण व्यक्ति आज किसी भी क्षेत्र में उन्नति कर रहा है। अब पहले जैसी स्थिति नहीं रही। लेकिन विषमतायें फिर भी हैं। यही वैषम्य हम विभिन्न स्थितियों में देख सकते हैं। भारतीय किसान की स्थिति आज और पहले के समय के अनुसार परिवर्तित हुई है। पहले कृषक अधिक समृद्ध न होकर विपन्न था। आज कृषक सम्पन्न होकर भी विपन्न है। इसका कारण यह है कि कुछ विषमतायें पहले थी लेकिन वे भिन्न-भिन्न रूपों में आज भी विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में किसानों की स्थिति का विश्लेषण योजनाओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया है

भूमिका

पहले कृषक उचित श्रम के बाद भी सामाजिक शोषण का शिकार होता था। साधनहीनता, आर्थिक कमजोरी के कारण वह शोषित होकर लाचार रहता था। आज साधन सम्पन्नता ने तरक्की के द्वार खोले हैं , लेकिन सामाजिक स्थितियाँ , राजनैतिक स्थितियाँे ने कृषक को कमजोर बनाया है। मूल रूप से आज का किसान अनपढ़ नहीं है जिस तरह पहले किसान से महाजन छल से अँगूठा लगवाकर जीवन भर उसका शोषण करते रहते थे। आज किसान इससे परे है। वैश्वीकरण के कारण संभावनाओं के द्वार खुले हैं। यद्यपि भौतिकता के कारण व्यक्ति यह भूल गया है कि हमारा जीवन प्रकृति से जुड़ा हुआ है। हम भिन्न नहीं हो सकते हैं। हम आधुनिक होकर जिस प्राकृतिकता को खो रहे थे वह अब दुःखद है। मानवीय भूलों के कारण ही आज प्राकृतिक संतुलन बिगड़ा जिसका अभिशाप प्रदूषण के रूप में तो हम सबने भोगा है। इसके अन्यान्य कारण भी देखने को मिले। यदि हम छोटे से रूप में ही देखें तो खाद्यान्य ही प्रदूषित है। इसके कारण अन्य हैं। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने के कारण ही आज कृषक भी प्रभावित है।

अवर्षा की स्थिति

उचित वर्षा का न होना या अधिक वर्षा का होना दोनों ही कारण किसान को निराश करते हैं। जो किसान केवल खेती पर ही निर्भर हैं , उनके जीवन की यह विडम्बना है कि उनके पास आय का कोई अन्य स्रोत ही नहीं है। जिसके घातक परिणाम यह भी देखे गये कि वे नैराश्य के गर्त में डूब कर आत्महत्या करते गये। अवर्षा के संकट पर ही यह पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'फड़फड़ाकर पंख आशा का मयूरा रह गया।
इस बार भी आया नहीं सावन हमारे गाँव में ।। "
(म.प्र. संदेश अक्टूबर-2015)

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आज प्राकृतिक असंतुलन के उपाय , निदान भी खोजे गये हैं। यानि समस्या आयी तो उसके समाधान भी खोजे जा रहे हैं लेकिन समय पर वर्षा नहीं होने से या अतिवृष्टि से दुःखी किसान हुआ है। प्रकृति की नाराजगी से प्रभावित किसानों के लिये शासन द्वारा उपाय किये जा रहे हैं। ओडिसा सरकार द्वारा सूखे की मार से पीड़ित किसानों के लिए ऋण वितरण की सुविधा दी जा रही है। कहीं-कहीं पर किसान सुविधा से मुक्त हैं उन्हें किसी भी तरह का वितरण सरकार द्वारा प्राप्त नहीं हो रहा है।

किसानों को शासन की विभिन्न सुविधायें, किसान हितैषी योजनाओं का लाभ भी दिया जा रहा है। जिससे किसानों का आर्थिक विकास हो सके। किसानों के लिये अमानत खाता भी खोला जा रहा है। किसान द्वारा अमानत राशि खाते में जमा रखने पर उसे ब्याज भी प्रदान किया जाता है। आज किसान के लिए सरकार सजग है। किसान स्वयं भी जाग्रत है उसे पहले की तरह शोषण का शिकार अब उस तरह नहीं होना पड़ता है जैसे प्रेमचन्द्र का 'होरी' आजीवन विपन्न ही बना रहता है और अन्ततः एक गाय पालने की साध बनी ही रह जाती है। भरसक प्रयास के बाद भी पहले कृषक निश्चिंत नहीं हो पाता था, जबकि आज कृषक यंत्रीय पद्धति से कार्य करके कम शारीरिक श्रम के द्वारा अधिक लाभ प्राप्त कर रहा है।

आज यदि किसान कम वर्षा के कारण प्रकृति की मार से पीड़ित होता है तो अन्याय सिंचाई के साधन प्राप्त करने की कोशिश करता है। यद्यपि कहीं-कहीं पर उसे मात्र सन्तोष ही करना पड़ता है। सरकारी व्यवस्थाओं में किसानों की समस्या को कम करने के निदान खोजे जा रहे हैं। राहत कार्य किये जा रहे हैं जिससे यदि सम्पूर्णता नहीं तो किसान अपूर्णता (अभाव) का अभिशाप भी नहीं झेले।

कहीं-कहीं पर अतिवृष्टि , ओला वृष्टि से भी किसान हताश हो जाता है क्योंकि फसलें खराब हो जाती हैं। कभी-कभी अच्छी वारिश और कहीं-कहीं पर कम वर्षा की स्थिति में किसान को निराशा ही हाथ लगती है। पहले की अपेक्षा आज की स्थितियों में शासन की गतिविधियों में तत्परता आई है। किसा नों को बीमा की राशि उपलब्ध करायी जा रही है। फसल बीमा योजना का अधिकतम लाभ किसानें को मिले ये प्रयास किये जा रहे हैं ताकि किसान उस निराशा से निकल सके। जिसका अंत जीवन से हार जाना है। जिन किसानों की फसलें सूखे से प्रभावित है उनके लिए ऋण वसूली स्थितिगत कर दी जाये , इस तरह के प्रयास शासन द्वारा किये गये हैं। 'फसल बीमा' और सिंचाई व्यवस्था भी शासन द्वारा की गयी है।

किसानों के दशा और साहित्य

कुछ क्षेत्र विशेष में किसानों को प्रकृति की ज्यादती के कारण हताशा में आत्महत्या करनी पड़ी। बेमौसम बरसात से किसानों ने आत्महत्या की। आज का किसान प्रेमचन्द्र का होरी नहीं है। प्रेमचन्द्र के किसान ने जीवन से हारने की बात नहीं कर पाई। इसके जीवन के यथार्थ को प्रेमचन्द्र ने दिखाया लेकिन बेवस होकर आत्महत्या करते हुए नहीं दिखा। इक्कीसवीं शताब्दी में भी किसान के सामने अनेक नई समस्यायें हैं , निदान नहीं होने पर किसान आत्महत्या को मजबूर हुआ है। आज भारतीय किसान अनेकानेक समस्याओं समस्याओं से घिरा हुआ है। सपरिवार खेती के कार्य में मनायोग से तत्पर होने पर भी वह लाभ उसके नहीं मिल पाता जो सम्पन्नता शहरी नौकरी पेशा व्यवसायी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को मिल जाती है और वह सफल जीवन प्राप्त कर लेता है।

भारतीय कृषि को देश की रीढ़ माना जाता है। वह सच इसलिए भी तो है कि जीवन के लिए भोजन अति आवश्यक है। भले ही वह आज विभिन्न रूपों में उपलब्ध है। पिछले 17 वर्षो में लगभग 300000 किसान आत्महत्या कर चुके हैं। 2007 से 12 के बीच करीब 3.2 करोड़ किसान अपनी जमीन और सब कुछ बेचकर शहरों में आये। गाँवों से किसानों का पलायन हुआ और हश्र भी अच्छा इस रूप में नहीं माना जा सकता कि किसान मजदूरी करके पेट भरने को विवश हुआ। यानि जो त्रासदी पहले की सामन्ती प्रथा में थी वहीं कहीं-कहीं पर अब भी दोहराई गई सी लगती है। कथा साहित्य सम्राट प्रेमचंद ने 'गोदन' में किसान के तबाह होकर मजदूर बनने की कहानी है।

प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में कृषक जीवन की जिस त्रासदी को दिखाया है वही आत्महत्या करते हुये किसानों की भी है 'होरी' गोदान का पात्र समझदार है वह आत्महत्या नहीं करता। जूझता रहता है और दोषी 'देव' को मान लेता है। प्रेमचंद ने फरवरी 1919 के 'जमाना' में लिखा है- ''क्या शर्म की बात नहीं है जिस देश में नब्बे फीसदी आबादी किसानों की हो उस देश में कोई किसान सभा किसानों का आन्दोलन का व्यवस्थित प्रयत्न न हो। '' नये जमाने ने एक पन्ना पलटा है आने वाला जमाना अब किसानों और मजदूरों का है प्रेमाश्रय उपन्यास में भी उन्होंने कृषक की समस्याओं का समाधान लाठी की ताकत में माना है। गवन उपन्यास में भी उन्होंने पात्रों के माध्यम से ग्राम्य जीवनकी अस्मिता को उजागर किया है। जमींदारी प्रथा , महाजनी प्रथा का विरोध पात्रों के माध्यम से व्यक्त है। आज अत्याधुनिकता की अति से ग्राम जीवन का महत्व जिस तरह से सामने है। क्योंकि कहा गया है-जैसा खाओ अन्न, वैसा होना मन। तो इसी विशुद्धीकरण के कारण हमें किसान की समस्यायें, संघर्ष, समाधान में सहयोग करना होगा।

प्रेमचन्द ने किसान की समस्यायें भूख, जमींदारी, महाजनी प्रथा को अपने कथा साहित्य में बड़ी मार्मिकता से रखा है। प्रेमचन्द ने अपनी एक कहानी में लिखा है- ''स्त्री बर्तन मांज रही थी और इस घोर चिनता में मग्न थी कि आज का भोजन क्या बनेगा? घर में अनाज का दाना नहीं था। चैत्र का महीना था, किन्तु यहाँ दोपहर ही को अन्धकार छा गया था उपज सारी खलिहान से उठ गई। उसी को पीट-पीट कर एक मन भर दाना निकला था। किसी तरह चैत्र का महीना पार हुआ।'' आधी महाजन ने ले ली, आधी जमींदार के प्यादों ने वसूल की। किसान के हाथ क्या बचा यह किसान की पीड़ा है। कि वह कमजोर ही रह जाता है।

योजना आयोग के अनुसार-कृषि समस्यायें हमारे लिए चुनोती हैं और इनका समाधान खोजने का उत्तरदायित्व मानव समाज पर है। यद्यपि वर्तमान समय में सुधार भी किये गये है। हिन्दी साहित्य में तारसप्तक के प्रयोगवादी कवियों ने कृषक जीवन की स्थिति का चित्रण किया। बाबा नागार्जुन तो किसानों के साथ हैं ही वे कहते हैं- प्रतिबद्ध हूँ, जी जाँ प्रतिबद्ध हूँ, ।
बहुजन समाज की अनुपम प्रगति के निमित्त।।
प्राकृतिक आपदाओं की मार किसानों पर ही पड़ती है। बाढ़, भूकम्प, अकाल किसानों के लिए तबाही लेकर आते हैं। जिनके समाधानों के परिणाम दीर्घकालिक हैं। मानव जीवन को जीने के लिए दीर्घ समय में किया गया कार्य

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपहास्यपद ही होगा। भूखे को रोटी आज चाहिए एक वर्ष या कुछ बाद नहीं। नागार्जुन के शब्दों में-''किसान आधा मजूर है। '' बाबा नागार्जुन ने कृषक जीवन की करूणता को अपने साहित्य में समग्रता से विश्लेषित किया है। यह मानना अनुचित बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि समस्याओं के समाधान के लिए पहला कदम स्वयं कठोरता से आगे बढ़ाना होगा तभी समाधान मिलेंगे। नागार्जुन कृषक जीवन यथार्थ अभिव्यक्ति करते हैं वे कृषक के साथ पूरी दयद्रिता के साथ हैं। मानवीयता को उन्होंने अपने काव्य में प्रमुख रूप से स्थान दिया है।

कथा साहित्य लेखिका मैत्रीय पुष्पा ने- ''इदन्नमम्'' और ''बेताब बहती रही '' में ग्राम्य जीवन की वर्तमान स्थितियों को अंकित किया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्रेमचन्द का मूल्यांकन करते हुए कहा है- 'प्रेमचन्द शताब्दियों से पद दलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे। उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार , विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा, आकांक्षा, दुःख-सुःख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक नहीं मिल सकता।''

भारत एक कृषि प्रधान देश है और कड़ी मेहनत से उपजाया अन्न मानव शरीर के जीवनार्थ उपयोगी है। यदि कृषक ही समस्याग्रस्त, संघर्षरत है तो इसका असर तो सभी के ऊपर ऊपर पड़ेगा। शायद हम सब इस सबको जानकर भी अंजाने बने रहते हैं। आज हम सभी को स्वार्थ को परे रखकर सर्व समभाव से इस पर वैचारिक विमर्श के बाद एक निश्चित निदान खोजना श्रेयस्कर होगा। शमशेर बहादुर सिंह अपनी कविता में लिखते हैं-

"शाम होने को हुई, लौटे किसान
दूर पेड़ों में बहा खग-ख
धूल में लिपटा हुआ है आसमान
शाम होने को हुई, नीरव।
तू न चेता। काम से थक कर
फटे मैले वस्त्र में कम कर
लौट आये खोलियों में मौन।
चेतने वाला न तू-है कौन ?"

राजकुमार अंबुज ने लिखा है- किसान-मजदूर में शोषण विरोधी चेतना पनप रही है। मजदूर हड़ताल पर, लेकिन मजदूरिन काम पर है। घर चलाने की मजबूरी है। गोदान उपन्यास में ही भोला होरी से कहता है- "कौन कहता है कि हम तुम आदमी है हममें आदमियत कहाँ ? आदमी तो वह है जिसके पास धन है, शोहरत है, इल्म है। हम लोग तो बैल है और जुतने के लिए पैदा हुए है।" यह अन्तर्पीड़ा है एक कृषक की जो हमें यह सोचने पर विवश करती है कि हम आधुनिक होकर आदमियत को भूल गये हैं। जो यह नहीं देख पाते हैं कि-

भरता सबका पेट मगर खुद हल्कू भूखा सोता है।

किसान आज और कल-

कृषक देश के प्राण कृषक खेती की फल है।
राजदण्ड से अधिक मान के भाजन हल है।।।

आज भारतीय कृषक बाजार के कुचक्र में इस तरह फस गया है कि वह लगातार आत्महत्यायें कर रहा हे। यह स्थिति सोचनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 मध्यप्रदेश संदेश अक्टूबर2015

2 भोपाल नया इंडिया राजकाज, शनिवार, 12 दिसम्बर 2015 पृ.क्र.4

3 वही

4 म.प्र. संदेश अक्टूबर 2015 अंक-10 कार्तिक, आश्विन वर्ष 111

5 सेमीनार पत्रिका चिरमिरी वर्ष 2015, पृ. 27 पृ. 24, पृ.23, पृ.22, पृ.21, पृ.19, पृ.17, पृ.13